www.thearyasamaj.org

Date of Publication: 25 November 2013

कमल ज्योति

(मासिक पत्र)

वर्ष-7, अंक-9 दिसम्बर 2013 विक्रमी संवत् 2070 सृष्टि संवत् 1960853113 एक प्रति का मूल्य 10/-रुपये आजीवन शुल्क 1100/-रुपये

ओ३म्

संस्थापक

भजनप्रकाश आर्य

संरक्षक

ओमप्रकाश हसीजा

प्रधान सम्पादक

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री
चलभाष : 9810084806

सम्पादक

एल.आर. आहूजा
आचार्य शिव नारायण शास्त्री
अतुल आर्य
चलभाष : 9718194653
दूरभाष : 011-27017780

सहयोगी सम्पादक

प्रिंसीपल हर्ष आर्या
चलभाष : 9999114012
राजीव आर्य
चलभाष : 9212209044
नरेन्द्र आर्य 'सुमन'
चलभाष : 9213402628

आत्म-जागृति

इयं कल्याण्यजरा मर्त्यस्यामृता गृहे।
यस्मै कृता शये स यश्चकार जजार सः॥

– अथर्वः 10.8.26

ऋषिः-**कुत्सः**॥ देवता-**आत्मा**॥ छन्दः-**अनुष्टुप**॥

शब्दार्थ- इयम्=यह **कल्याणी**=कल्याणस्वरूपिणी देवता **अजरा**=कभी जीर्ण न होनेवाली, कभी बुढडी न होनेवाली है। यह **मर्त्यस्य**= मरणशील मनुष्य के **गृहे**=घर में, शरीर में धारण की गई **अमृता**=अमृत है, न मरनेवाली है, किन्तु **यस्मै**=जिसके लिए **कृता**=यह धारण की गई है **सः**=वह **शये**=सोया पड़ा है, इसे **यः**=जिसने **चकार**=धारण किया है **सः**=वह भी **जजार**=जीर्ण हो जाता है।

विनय- देखो, यह कल्याणस्वरूपिणी देवता है जो कभी बुड्डा नहीं होती, सदा अजय है। यह मरणशील मनुष्य के, मर्त्य के घर में धारण की गई अमृत है, कभी न मरनेवाली है। यह इस घर में न जाने कब से बैठी है, पर बड़े दुःख की बात है कि यह जिसके लिए आई है, जिसके लिए घर में धारण की गई है वह सोया पड़ा है, वह लगातार सोया पड़ा है। उसे धारण करनेवाला यह घर जीर्ण हो जाता है और ढह जाता है, फिर भी उसकी नींद नहीं समाप्त होती।

क्या तुम समझे कि यह कल्याणी देवता किसके लिए आई हुई है? शरीररूपी मर्त्यगृह में धारण की गई यह आत्मदेवता किस काम के लिए बैठी हुई है? यह तो जीव का कल्याण करने के लिए आई हुई है। यह माता तो अपने जीव-पुत्र को उसके कल्याणमय मंगलधाम में ले-जाने के लिए आई हुई है और न जाने कब से पुत्र के जगने की प्रतीक्षा में बैठी हुई है। उसे धारण करनेवाले एक नहीं बहुत-से घर जीर्ण हो चुके हैं, बहुत-से शरीर बुड्डे हो चुके हैं, पर वह प्रतीक्षा में बैठी हुई है। यह अजरा अमृता माता तो अनन्त काल तक ऐसे ही निर्विकार बैठी रह सकती है और जबतक जीव न जागेगा तबतक बैठी रहेगी। पर हाँ! चिन्ता की बात तो यह है कि जीव कब जागेगा? यह पुत्र कब जागेगा? कब जागृति पाएगा।

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

गतांक से आगे

सामवेद संहिता

–श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा

तरत्स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः। तरत्स मन्दी धावति॥
उस्रा वेद वसूनां मर्तस्य देव्यवसः। तरत्स मन्दी धावति॥
ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योरा सहस्राणि दह्महे। तरत्स मन्दी धावति॥
आ ययोस्त्रिंशतं तना सहस्राणि च दह्महे।
तरत्स मन्दी धावति ॥779॥

बने प्राणाप्रद सोम सरोवर में, साधक जन तरता है।
आनन्द-रस में मगन हुआ, नित-नित उन्नति करता है॥
रक्षा-शक्ति दे धाराएँ, आत्मिक धन देती हैं।
भवसागर पार कराने को, आनन्द के प्रति खेती हैं।
दुःखनाशक और कर्म प्रकाशक, ज्ञान कर्म को माना है।
अमृत धारा पाकर इससे, सानन्द लक्ष्य को पाना है॥
तीन सौ हजारों इन, आनन्द-धाराओं को हम धारें।
आनन्दी बन भक्त हमेशा, अपना पावन लक्ष्य संवारें॥

एते सोमा असृक्षत गृणानाः शवसे महे। मदिन्तमस्य धारया॥
अभि गव्यानि वीतये नृम्णा पुनानो अर्षसि। सनद्वाजः परि स्रव॥
उत नो गोमतीरिषो विश्वा अर्ष परिष्टुभः।
गृणानो जमदग्निना ॥780॥

आनन्द धारा सोम की, जो पी गए महान हैं।
ज्ञान का उपदेश दे, पाया सोम का स्थान है॥
हे सोम आकर ज्ञान दे, अज्ञान का कर नाश तू।
ऐश्वर्य हम को दान कर, कर ज्ञान का प्रकाश तू॥
संकल्पधारी भक्त बन, सोम के हम गीत गायें।
ज्ञान के आलोक से हम, शुभ कर्मों की ओर जायें॥

इमं स्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव सं महेमा मनीषया।
भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसद्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव॥
भरामेध्मं कृणावामा हवींषि ते चितयन्तः पर्वणा पर्वणा वयम्।
जीवातवे प्रतरां साधया धियोऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव॥
शकेम त्वा समिधं साधया धियस्त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम्।
त्वमादित्याँ आ वह तान् ह्य अश्मस्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव॥781॥

पूजनीय अग्नि जो सब में, सब को सुख देने वाला।
मनन बुद्धि से उसको गायें, मित्र अज्ञान हर लेने वाला॥
तेरे तेज को जान अंगों में, जागृत हो उपहार धरें।
ज्ञानप्रदाता जीवन-यज्ञ में, तेरे मित्र बन मोद भरें॥
तेरे उपहार के योग्य बनें, ज्ञान कर्म बलवान करो।
दिव्य शक्तियां हवि भोग, त्यागभाव यह जान भरो॥
हे ज्ञान-रूप आलोक दाता, दिव्य गुणों का दान दो।
तेरी मित्रता दुःख न देवे, ऐसा हमें शुभ ज्ञान दो॥

प्रति वां सूर उदिते मित्रं गृणीषे वरूणाम्। अर्यमणं रिशादसम्॥
राया हिरण्यया मतिरियमवृकाय शवसे। इयं विप्रा मेधसातये॥
ते स्याम देव वरूण ते मित्र सूरिभिः सह।
इषं स्वश्च धीमहि ॥782॥

मेरे मन में प्रेरक ज्योति, उदय हुई दिखलाती है।
विघ्नविनाशक विवेक पाऊँ, न्यायशक्ति मन भाती है॥
सुन्दर धन को देने वाली, विवेक-प्रभा जब आ जाए।
हिंसा कपट रहित बुद्धि से, जीवन में शुद्धि छा जाए॥
हे पाप विनाशक वरूण सदा, तू सद्भावों में स्मरण करे।
अपनी क्रियाशक्ति को लेकर, ज्ञान परम सुख वरण करे॥

भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः।
वसु स्पार्ह तदा भर ॥
यस्य ते विश्वमानुषग्भूरेर्दत्तस्य वेदति। वसु स्पार्हं तदा भर॥

मेरे मन में प्रेरक ज्योति, उदय हुई दिखलाती है।
विघ्नविनाशक विवेक पाऊँ, न्यायशक्ति मन भाती है॥
सुन्दर धन को देने वाली, विवेक-प्रभा जब आ जाए।
हिंसा कपट रहित बुद्धि से, जीवन में शुद्धि छा जाए॥
हे पाप विनाशक वरूणा सदा, तू सद्भावों में रमणा करे।
अपनी क्रियाशक्ति को लेकर, ज्ञान परम सुख वरूण करे॥

भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः।
वसु स्पार्हं तदा भर ॥
यस्य ते विश्वमानुषग्भूरेर्दत्तस्य वेदति। वसु स्पार्हं तदा भर॥
यद्वीडाविन्द्र यत् स्थिरे यत् पर्शाने पराभृतम्।
वसु स्पार्हं तदा भर ॥783॥

हे इन्द्र मेरे मन से, हिंसा भाव सारे दूर कर।
सब का ही चाहें भला, दिव्यानन्द से मन पूर कर॥
हे इन्द्र तेरे दान से ही, सारा जग सुख पाता है।
उसे तू आनन्द-धन से भरता, जो तेरे ढिंग आता है॥
हे इन्द्र अदम्य सुन्दर, प्रभुता से प्रभुतावान करो हो।
जिस को पाकर दृढ़ संकल्पी, जन-जन में धनवान हो॥

यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा सस्नी वाजेषु कर्मसु।
इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥
तोशासा रथयावाना वृत्रहणापराजिता। इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्॥
इदं वां मदिरं मध्वधुक्षन्नद्रिभिर्नरः ।
इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥784॥

हे इन्द्र अग्नि! जीवन-यज्ञ के, तुम्हीं चलाने वाले हो।
जीवन में जागृति दो, ज्ञान कर्म सिखाने वाले हो॥
तुम दोनों जीवन संगर में, सुख से आगे बढ़ते हो।
मुझे ज्ञान दो इसी यज्ञ का, तुम विघ्नों को हरते हो॥
जीवन-यज्ञ में दिव्य नरों ने, तुम दोनों हित अमृत खींचा।
उसको पान करो यत्नों से, जिस ने मन वाणी सींचा॥

[क्रमशः]

www.thearyasamaj.org

गतांक से आगे

जीवन-मृत्यु का चिन्तन

–डॉ. महेश विद्यालंकार

आम आदमी दिनरात सांसारिक चीजों, भोगों एवं लोगों की बातों में व्यतीत करते हैं। ऐसे व्यक्तियों को सत्संग, प्रभुभक्ति, आत्मचिन्तन आदि की बातें अच्छी नहीं लगती हैं। पहले लोग धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों में सन्तुलन व समन्वय बनाए रखते थे। आज धर्म और मोक्ष के भाव छूट गए हैं, केवल अर्थ व काम की प्रधानता और चर्चा है। जब तक धर्म का अंकुश धन व कामवासना पर नहीं लगेगा, तब तक मनुष्य शान्त, सन्तुष्ट व प्रसन्न न हो सकेगा और मन नहीं सुधरेगा।

यह दुनिया अपने में बड़ी समझदार है। सब कामों के लिए समय निकाल लेती है, परन्तु सत्संग, स्वाध्याय, प्रभुभक्ति, साधना, सेवा आदि के लिए उसके पास समय नहीं है। सभी समय न होने की शिकायत करते हैं। यदि मजबूरी वश ऐसे स्थानों में जाना भी पड़े तो वहाँ केवल समय काटने के लिए ही जाते हैं। सत्संग, कथा, प्रवचन, यज्ञ आदि जीवन को सुधारते हैं। ये बातें बुराइयों व दोषों को छुड़ाने में ब्रेक का काम करती हैं। इनसे हमें ज्ञान की रोशनी मिलती है। सत्संग से हमें विचार मिलते हैं, विचारों से हृदय बदलता और ज्ञान जागृत रहता है।

वैदिक चिन्तन-धारा में जीवन को आस्तिकता के साथ बड़ी गहराई से जोड़ा गया है। आस्तिकता ऐसा खूँटा है, जिससे बँध जाने के बाद मनुष्य अनेक दु:खों, उलझनों, विवादों, समस्याओं, परेशानियों आदि से काफी हद तक बचा रहता है। जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति में आस्तिकता की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसी से जीवन में सच्ची सुख-शान्ति, सन्तोष, प्रसन्नता एवं आनन्द की प्राप्ति संभव है। आज बड़ी तेजी से बुद्धिवादी नास्तिकता फैलती जा रही है। पढ़े-लिखे सभ्य और अपने को समझदार समझने वाले लोग आस्तिकता से दूर होते जा रहे हैं। इसी का परिणाम है कि जीवन के प्रति दृष्टिकोण नितान्त भोगवादी तथा भौतिकतावादी हो रहा है।

वैदिक जीवनशैली में जीवन का अन्तिम उद्देश्य प्रभु-प्राप्ति माना गया है। धार्मिकता, आध्यात्मिकता, आत्मचिन्तन, प्रभुचिन्तन, साधना, सेवा आदि जीवन की पूँजी तथा उपलब्धियां मानी गयी हैं। जीवन में जगत् को देखने, भोगने तथा अनुभव करने के बाद, वृद्धावस्था तक आते-आते प्रभु में पूर्ण आस्था, विश्वास, ज्ञान-विवेक तथा वैराग्य आ ही जाना चाहिए। धन-दौलत, चीजों, रिश्तों आदि में सार क्या है और ये कितना साथ देंगे-यही समय आने पर इन्सान जागृत होकर प्रभु की ओर बढ़ेगा।

मानव गृहस्थ के अनेक उतार-चड़ाव, मान-अपमान और ऊँच-नीच थपेड़ों को देख व भोगकर निराश-हताश, चिन्तित और रोगी होकर प्रभु के द्वार पर पहुँचता है। वही द्वार उसे सहारा, हिम्मत और शान्ति देता है। प्रभुभक्ति से मनुष्य को सुबूद्धि मिलती है, जिससे भविष्य में होने वाले पापकर्म रूक जाते हैं। मनुष्य परमात्मा को दु:ख, बीमारी, श्मशान, कथा, मन्दिर आदि में याद करता है, बाकी समय में भूला रहता है। मतलब निकल जाने के बाद दुनिया परमेश्वर मन्दिर आदि में याद करता है, बाकी समय में भूला रहता है। मतलब निकल जाने के बाद दुनिया परमेश्वर को भुला देती है। यदि ईश्वर हमें भुला दे तो जीना असंभव हो जायेगा। यह दुनिया कैसी विचित्र, अज्ञानी व स्वार्थी है कि वह पहले दुर्गा माँ और गणेश जी की प्रतिमाएं बनाकर उन्हें पूजती, प्रार्थना और आराधना करती है, उन्हें जीवन का सर्वस्व समझती है और करोड़ों रूपये उन पर व्यय करती है, परन्तु बाद में उन्हें नदी व समुद्र में छोड़ आती है, परन्तु बाद में उन्हें नदी व समुद्र में छोड़ आती है। क्या परमात्मा व आराध्यदेव नदी व समुद्र में डालने की चीज हैं? यदि परमेश्वर हमें समुद्र में डाल दे तो हम कहाँ होंगे? सोचो, समझो और सुधारो अपने को। प्रभु तो सदा साथ रखने की चीज है।

जो प्रभु का स्मरण तथा धन्यवाद नहीं करते हैं, वे अपराधी और कृतघ्न होते हैं। यही एक द्वार है, जहाँ मनुष्य को शरण, शान्ति और अपनत्व मिल सकता है। मनुष्य प्रभु से जितना दूर होता जायेगा, उतना अशान्त, असन्तुष्ट तथा भटकन की ओर बढ़ेगा। प्रभु से जितना जुड़ेगा, उतना ही शान्त, सन्तुष्ट, प्रसन्न एवं आनन्दित होगा और तभी जीवन जीने का स्वाद आयेगा।

दुनिया के सभी सुख, सुविधाएँ, भोगपदार्थ क्षणिक और अपूर्ण हैं। परमात्मा ने मनुष्य को दुनियावी सुख-साधन और भोगपदार्थ सब भरपूर दिये हैं, मगर मन की शान्ति अपने पास रख ली है। मन की शान्ति मनुष्य की सबसे बड़ी सम्पदा है। यदि मन में शान्ति नहीं है, तो अपार सुखसाधन, सत्संग, भक्ति व धन आदि व्यर्थ हैं। मन की शान्ति पाने के लिये मनुष्य को प्रभु की शरण में जाना ही होगा। भौतिक भोगों को पाने के लिए इन्सान को धन, समय व शक्ति तीनों लगाने पड़ते हैं। प्रभु से आनन्द पाने के लिए केवल समय देना पड़ता है। ऐसा करने से शक्ति घटने के बजाय बढ़ती है और इसमें धन की कोई जरूरत नहीं है। सांसारिक भोगों में मन, इन्द्रियाँ और बुद्धि बिगड़ व बीमार हो जाते हैं। परमात्मा के आनन्द में मन तथा

www.thearyasamaj.org

इन्द्रियाँ आत्मा के अधीन हो जाते हैं। जगत् के भोगपदार्थों से व्यक्ति रोगी बनकर जल्दी मृत्यु का ग्रास हो जाता है। आत्मिक आनन्द में आदमी रोगों से छूटकर लम्बी आयु प्राप्त कर लेता है। भौतिक सुखों से मन ऊबता, खिन्न होता और नये-नये भोगपदार्थों के लिए बेचैनी बढ़ती है। पारमार्थिक आनन्द में आत्मा तृप्ति, शान्ति व पूर्णता पाता है। जगत् में आत्मा तृप्ति, शान्ति व पूर्णता पाता है। जगत् में जितने भोगपदार्थ हैं, उनमें दु:ख व पीड़ा छिपी हुई है। वे परिणाम में दु:खदायी होते हैं। संसार की प्रिय से प्रिय सुखदायक वस्तु कुछ काल के पश्चात् रसहीन लगने लगती है। प्रभु के आनन्द में आत्मा सच्चा सुख पाती है। दुनियावी सुख क्षणिक हैं, इनको आत्मा भोगकर कुछ समय के बाद तटस्थ हो जाती है। फिर भोगने की चाह जागृत हो जाती है। परमेश्वर के आनन्द में आत्मा कभी ऊबती व बैचन नहीं होती है। वेद कहता है-बिना प्रभु को जाने सांसारिक दु:खो से निवृत्ति संभव नहीं है। परमात्म-कृपा से मोहमाया, भोगवासना, कामनाओं आदि से छुटकारा संभव है। उसी के सान्निध्य में आत्मा सच्चे सुख व आनन्द को भोगती है। प्रभु-कृपा से ही जीवन आवागमन के चक्र से छूटता है। प्रभु-भक्त बनने से व्यर्थ की अनेक बातें छूट जाती हैं और जीवन की भौतिक समस्याओं का समाधान भी हो जाता है। अन्दर बैठा वह परमात्मा हमें सब प्रकार से सम्भालता है। परमेश्वर से बढ़कर हमारा और कोई सच्चा हितैषी नहीं है। दुनिया में सबसे नजदीक तथा सदा साथ रहने वाला मित्र प्रभु ही है। वह हमारा सच्चा उपदेशक और गुरु है। वह अन्दर बैठा निरन्तर हमें पाप, अधर्म, बुराइयों आदि से सावधान करता है, मगर स्वार्थ लोभ व अज्ञान के कारण हम उसकी आवाज नहीं सुनते और पापकर्म कर जाते हैं। दुनिया के सारे रिश्ते-नाते टूट व छूट जाते हैं, मगर प्रभु की नाता हमेशा बना रहता है। वह हमें कभी अपने से अलग नहीं करता और हमारा बुरा नहीं सोचता है।

इस सृष्टि का राजा परमात्मा है और वही हमारा असली शासक है। उसी का शासन जल-थल-नभ में सर्वत्र विद्यमान है। वह अपने नियमों, कार्यों, व्यवस्था, रचना, अनुशासन आदि से अपनी सत्ता तथा पहिचान प्रकट कर रहा है। वह शक्ति है, व्यक्ति नहीं है। वेद कहता है-'ईशावास्यमिदं सर्वम्'-ईश्वर जड़-चेतन आदि में सर्वत्र ओतप्रोत व विद्यमान है। सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, नदी, पर्वत, सागर आदि सभी उसकी सत्ता का संकेत कर रहे हैं। यह विशाल संसार उसका विराट् रूप है। मनुष्य जितना प्रभु की रचना, लीला, नियम, व्यवस्था तथा कार्यों के बारे में सोचता है, उतना ही अपने को अल्पज्ञ और अंहकाररहित अनुभव करता है। उपनिषद् ने भी कहा है-नेति-नेति-अर्थात् प्रभु का ज्ञान तथा साम्राज्य अनन्त हैं, और आगे बढ़ो। वह अगम्य है। ऋषि-मुनि, ज्ञानी-ध्यानी सभी प्रभु के कार्यों और रहस्यों को समझ नहीं सके हैं। विज्ञान-जगत् इतना प्रगति कर लेने पर भी आज तक चेतन का निर्माण नहीं कर सका है। उसे अभी तक मृत्यु पर विजय नहीं मिली है। वह आँधी-तूफान, भूकम्प आदि के सामने निरुत्तर है। अनेक ऐसे प्रश्न तथा रहस्य हैं, जिनका विज्ञान के पास कोई उत्तर नहीं है। आज विज्ञान भी परमसत्ता, जो सृष्टि का रचयिता, संचालक व नियामक है, उसकी ओर संकेत करने लगा है। जहाँ पर विज्ञान का अन्त है, वहाँ से आत्मा व परमात्मा का विज्ञान प्रारम्भ होता है। विज्ञान का क्षेत्र भौतिक जगत् है। अध्यात्म का क्षेत्र आन्तरिक है।

विज्ञान उसी को मानता है, जो इन्द्रियों द्वारा अनुभुत होता है। जो इन्द्रियों का विषय नहीं है, उस पर उसका विश्वास नहीं है परन्तु यह शरीर अदृश्य सत्ता पर टिका हुआ है। जिस सत्ता पर टिका है, उसे आत्मा कहते हैं। यह जगत् जिस अदृश्य शक्ति पर आधारित है, उसे ईश्वर कहते हैं। परमात्मा अनुभूति का विषय है। यह शरीर भगवान् का मन्दिर है, इसी में वह रहता है। इसी हृदयरूपी मन्दिर में आत्मा परमात्मा का ज्ञाननेत्रों से अनुभव करता है। इसके अतिरिक्त परमात्मा संसार की रचना में सर्वत्र विद्यमान है-पत्ता-पत्ता, डाली-डाली उसकी याद दिलाते हैं। यह सारी सृष्टि अपने बनाने वाले की ओर संकेत कर रही हैं।

वेद का सन्देश है-आस्तिक बनो। परमेश्वर की सत्ता, रचना, नियम, व्यवस्था, कर्मफल, न्यायव्यवस्था सर्वशक्तिमत्ता, सर्वव्यापकता आदि पर आस्था एवं दृढ़ विश्वास रखना आस्तिकता कहलाती है। परमात्मा को हमारी जरूरत नहीं है, मगर प्रभु के बिना हमारा जीवन और जगत् एक पल भी नहीं चल सकता है। हमें परमेश्वर की पल-पल तथा पग-पग पर आवश्यकता है। परमात्मा हमें कभी नहीं छोड़ता है, पर हम उसे छोड़ देते हैं। वह अन्तर्यामी अन्दर बैठा हुआ हमें नित्य सँभालता और जीवन देता है।

जो अन्तरात्मा की आवाज सुनते हैं, वे देवता बन जातें हैं। जो उसको न सुनता और न मानता है, वह शैतान हो जाता है। देर-सबरे सभी को उसकी शरण में आना ही पड़ता है। वह रगड़ा-रगड़ाकर अपनी व्यवस्था व नियमों का पालन कराने के लिए बाध्य कर रहा है। कहाँ भागकर जाओगे? सभी उसकी नियम-व्यवस्था के आगे नतमस्तक हैं। उसके बल से बड़े-बड़े बलवान्, धनवान, विद्यावान्, राजे-महाराजाओं का अस्तित्व क्षण भर में समाप्त हो जाता है। वह पलों में राजा से रंक बना देता है। दुनिया का इतिहास व घटनाएं इसका प्रमाण हैं।

(क्रमश:)

www.thearyasamaj.org

Contd. from Last Issuse

Eradication of Superstitions

GURU

—Madan Raheja

The above analyze shows that the man has many avenues of learning available to him. He has to utilize all of them. During this process, he is likely to lose the right track at different accessions. Then the adopted 'gurus' show him right path. He guides the man from untruth to truth, from darkness to light and finally from mortality to immortality.

Superstition#2: It is said that talking ill of saints, sages, hermits and gurus is a sinful act!

Comments: It is correctly said not to speak ill of anyone. However, none should be afraid of speaking the truth. To know, to recognize and to speak the same about somebody, as he/she is known to be, is his real eulogy. There should be no objection in this and this cannot be termed as talking ill of him. To present erroneous facts and to find fault with somebody without any reason in his absence can be called as speaking ill of him. No doubt, this is bad. To do something against ethics and truth could defiantly be named as a sinful act.

The noble souls and the enlightened personalities whether they have renounced the world or not but are engaged in the benevolent activities for the welfare of the manking should all be praised and one should not even think ill of them leave aside talking ill about them.

On the other hand there is no dearth of fake 'Sadhus' (saints) around us now a days. They don`t the saffron robes. Some of them adopt the mendicancy and go from door to door where they mislead the innocent & ignorant housewives as well as domestic servants for their personal gains. While others try to create an intellectual dominion by self-aggrandizement-called' gurudom' through false publicity. Such people create a seat for themselves and keep themselves always surrounded by their so-called disciples. Their total process of thinking, speaking, behaviour and actions is self-centred and not according to the Vedas. Whenever they preach, guide and give discourses emphasizing the importance of moral values contained in the Vedic Literature i.e. A'rsha Granthas; they must be praise. But as & when they collect crowds by practicing hocus-pocus and talk about voodoos & witchcraft with an intension of misleading the public & gaining self-respect, such fake people even in saffron robes must be exposed. Their realities should be told to the public. It won`t be wrong to call such persons as fraud and their exposure cannot & should not be termed as 'ill-talk about saints & gurus'. In fact, they are a disgrace to these sacred names.

Hence, only genuine "Sadhus, Saints and Gurus' should be respected and honoured accordingly. It is the absolute duty of their disciples to obey their dictates and they should not hesitate in serving such benevolent personalities. There cannot be two opinions about this fact.

Dear friends-remember! Criticizing & exposing the frauds persons acting as 'Saints & Gurus' is not at all a sinful act, actually it is a virtuous act. Additionally one more eternal truth should be borne in mind that the mentor & the guide-the real saints or gurus is also a human being and he/she can never take the place of God or he/she can never be equal to Him. To err is human and to that extent the mistakes committed by a real 'Guru' also should be pointed out to him/her politely. This will be our service to the mankind.

Superstition # 3:The saints whose names are followed by "Shre, Shri Shri, Shri 108, Shri 1008 etc. are supposed to the perfectly enlightened and closer to God!

Comments: The Upanishads say that there are 1007 arteries and veins connected to human`s heart and Yogic achievements are acquired through them. A yogi who has got expertise in this special knowledge this number 107+God=108 is added to his/her name and which is only an illusion and blind faith.

This thiniking can be analysed in another aspect also. Number 108 has three numbers e.g. 1, 0 and 8 in which# symbolizes God;#0 represents the nature (Prakriti), which is insensate/inanimate thing and # 8 is meant for the soul. Both God and Soul are animate beings. A soul can achieve the proximity of God with the help of eight stages of Yoga. A man who has understood the philosophy of 'Trinity' i.e. God, sould can achieve the proximity of God with the help of eight stages of Yoga. A man who has understood the philosophy of 'Trinity' i.e. God, soul and nature, is called an accomplished person and usually his name is proceeded by number 108.

(To be Continued)

www.thearyasamaj.org

WORDS OF ENLIGHTENMENT

FATHER`S LETTER TO DAUGHTER

Dear Daughter, Blessings!

You want to go to the temple every Tuesday night. It is a good thought. It shows that you have a religious bent of mind and that you think positive. This ideology will prevent you from being off-track. If religion interests you, then nothing can deflect you from the right path. I congratulate you for such thoughts. May God almighty always guide you and encourage you to understand the true nature of God and follow His principles.

But one point intrigues me. Why have you chosen Tuesdays to go to the temple and that too at night ? Why not some other day ? Does God appear only on Tuesdays, and remain hidden on Mondays, Wednesdays , Thursdays, Fridays, Saturdays, and Sundays ? And why do you choose night time for your visits? Does God present Himself only at night, and not in the morning ? He certainly does not. If you call Him "Father", then you need not hesitate in visitng Him on any day and at any time. Nor is it necessary for you to limit the duration of your visit to a mere minute. Further, do you really need to go to the temple to meet Him ? Isn't He omnipresent ? Isn't He present at your home, on the street, and even within your mind ? If yes, then who is this god in the temple. Obviously he is not the real God. Because if he is, then the priest should not have to lock him up at night .How can the priest be controlling Him that controls each one of us ?

Treating the deity in the temple as God, results in some illogical situations. Suppose the priest doesn't unlock the temple gates on a particular day, then we would become deprived of seeing God. This would mean that we would become dependent on the priest to meet God ? Isn't it a terrible illusion ? God is all powerful and does not need some human being to take care of Him, bathe Him, change His dresses, and protect Him from intruders. It is He who protects all of us. It is He, who feeds all of us . How can we even think of feeding Him ? It is therefore clear that we cannot see Him at the temple. In fact, He cannot be seen by our physical eyes at all. He can only be felt by our Soul after performing good deeds and self study.

By the foregoing , I do not mean to suggest that you should not go to the temple at all. You should definitely go there, but with a different purpose. You may go to the temple when religious sermons are being delivered. If you believe in Lord Ram, then you should go to the temple when the teachings of Ramayana are being taught. If you have faith in Lord Krishna, then go to the temple when the essence of Gita is being taught. Listen to the devotional songs and sermons in the temple, and reflect over their meanings. Going to the temple for such purposes, will have a magical effect. Your mind and heart will be stimulated. You will be able to bring peace and sanctity to your home. You may even be motivated to go there everyday, and for long durations. But going to the temple once a week and bowing before the deity for a minute, is deceiving yourself, and even deceiving God.

Further, I hear that you throw some coins before the idol. Let me first ask you for whom do you intend this money? If it is for God, then dear daughter, you are being unjust. You are insulting God. Do not treat God like a beggar on the street, who receives coins thrown at him by people who pity him? God is the giver of everything. What can we offer Him? If you are offering the money to Lord Ram, then remember that Ram was a king. He used to give to others. Your offering money to him is a great insult to him. If you want to give money to the to the priest, then you can give it to him directly. There is no need to first throw the

www.thearyasamaj.org

money at the idol of God, as if you want to make Him a witness to your donation. He is in any case going to know about the gesture, because He is Omniscient. and knows everything. And finally if you want to make a donation to the temple, it would be better to go to its office and donate the money there. But please do not , under any circumstances, reduce God to the status of a beggar.

Similarly, if you are offering food or sweets to this idol of God,, please stop doing this. He who feeds every one on earth, does not need to be fed by others. God will be more pleased if you give the sweets to the priest, or feed the poor and the hungry every week. In short, it is not necessary to go to the temple to meet God, because He resides everywhere, even in your home and also in your mind. Nor is it necessary to follow any specific rituals or techniques to please Him. Saints and poets have expressed this thought in many ways. For example Mira bai says:

न मैं जानूं आरती बन्धन न पूजा की रीत ।
मैं अनजानी दरस दिवानी मेरी पागल प्रीत ॥

Na main jaanu aarti bnadan, na pooja ki reet,
Main anjani daras deewani, meri pagal preet.

(I neither know the procedures of worship, nor the methods of praying. All I know is that I love Him and yearn to look at Him)

Another poet says thus:

अजब हैरान हूं भगवन् तुझे क्यों कर रिझाऊँ मैं।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊँ मैं।
खिलाता है जो सब जग को उसे क्यों कर खिलाऊं मैं ॥

Ajab hairan hoon Bhagwan,
tujhe kyunkar rijhaoon main,
Koi wastu nahin aisi,
jisse sewa main laoon main.
Khilata hai jo sab jag ko,
usse kyunkar khilaoon main.

(I am confused about how to please you, dear God. There is not a thing, that I can offer you. Nor can I feed you , when you alone feed the entire universe)

And yet another poet thinks,

तेरे पूजन को भगवान् बना मन मन्दिर आलीशान ।

Terey poojan ko Bhagwan,
Bana mun mandir aalishan.

(Dear God, I worship you within the temple of my mind.)

So dear daughter, you need not go to the temple to meet God . You can meet Him in your own home. If you want to go to the temple, go at the time of sermons, so that you can differentiate between right and wrong. Go there every day if you want, and at all such times when you can receive the gift of knowledge, which is proven to be true, and which appeals to your heart, mind and soul.

Your father.

By Mahatma Anand Abhilashi (jagdish Chandra Jasuja)
Vanprastha Ashram, Jawalpur, Haridwar

माँ का जन्म

1. जिस घड़ी बच्चा जन्म लेता है, माँ का जन्म उस घड़ी होता है, इससे पूर्व वह केवल एक स्त्री होती है। माँ नहीं थी। माँ होना उसके लिए नई बात थी।
2. माँ और मातृत्व स्वर्ग से बढ़ कर है। (प्राचीन भारतीय आस्था)।
3. माँ सब कुछ होती है, शोक के समय ढांढस बंधाती है, दुःख की घड़ी में आश्वासन देती है, दुर्बलता की स्थिति में वह बलदा है। माँ, ममता, दया, संवेदना तथा त्याग की मूर्ति है।
4. माँ के खोने का अर्थ है एक दिव्य आत्मा का ह्रास जो निरंतर आशीष और रक्षा का स्रोत थी। (खलील जिब्रान)
5. नन्हें बच्चों के मनों और वाणी में माँ और परमात्मा एक वस्तु का नाम है। (विलियम एम. ठाकरे)
6. मुझे अपनी मां की अशीषें पूर्णतयः याद हैं और सदा मेरे साथ रही हैं। अपितुः वह आशीष उम्र भर मेरे साथ चिपकी रही है। (इब्राहिम लिंकन)
7. जब प्रभु ने मां की कल्पना की होगी, तब वह सन्तुष्ट होकर खूब हंसा होगा और शीघ्रता से निर्माण कर दिया होगा। इतना शानदार, इतना गंभीर, इतना पवित्र, आत्मीयता, शक्ति तथा सुन्दर कल्पित निर्माण। (हेनरी वार्न बीचर)
8. माँ को गाली देना महा पाप है। (शेख सादी)

- जयदेव हसीजा
124, विस्ता-विलाज, ग्रीनवुड सिटी, सैक्टर-47, गुरुग्राम-122001

www.thearyasamaj.org

सुख और दु:ख तो हमारे मन की कल्पना है

–ललित गर्ग

सुख और दु:ख का संबंध मन में उठने वाले भावों और कल्पना से अधिक होता है। उसमें किसी पदार्थ और परिस्थिति की उतनी भूमिका नहीं होती। अगर सुख-दुख का पदार्थों से कोई लेना-देना होता तो एक ही पदार्थ से कभी सुख और कभी दु:ख का अनुभव नहीं होता। परिस्थितियों के संबंध में भी यही बात सत्य प्रतीत होती है। आखिर क्यों एक ही परिस्थिति किसी को सुखी और किसी को दु:खी बनाती है?

एक किसान की दो पुत्रियों की शादी उसके गांव में ही हुई थी। एक की ससुराल में खेती-बाड़ी होती थी, दूसरी की ससुराल में मिट्टी के बर्तन बनाए जाते थे। एक दिन किसान ने दोनों से मिलने का विचार किया। वह पहले खेतवाली लड़की के घर पहुंचा। उसने उससे कुशलक्षेम पूछा। पुत्री ने कहा-'पिताजी! इन दिनों एक चिंता सता रही है। खेत में अधपकी हुई फसल खड़ी है, वर्षा की आवश्यकता है। कई दिनों से आकाश में बादल मंडरा रहे हैं पर वर्षा नहीं हो रही। मैं रात-दिन आजकल वर्षा की ही माला फेरती हूं।'

इसके बाद किसान दूसरी लड़की की ससुराल पहुंचा और उसकी स्थिति की भी जानकारी ली। उस लड़की ने कहा 'इन दिनों हमने मिट्टी के हजारों बर्तन बनाएं हैं, उन्हें धूप में सुखाने की जरूरत है। आजकल रोजाना बादल छाए रहते हैं। यदि दस-पांच दिनों में बर्तनों को तेज धूप नहीं मिली तो हमारी मेहनत बेकार चली जाएगी।'

दोनों पुत्रियों की समस्या सुनकर पिता हंसने लगा। उसने दोनों बेटियों को घर बुलाकर कहा-'परिस्थिति पर ही निर्भर मत रहो, अपने मन को उदार बनाकर समाधान खोजो।' उसने कहा- यदि वर्षा हो जाए तो खेती में जितनी कमाई हो उसका आधा-आधा तुम दोनों ले लेनां यदि वर्षा नहीं हो तो बर्तनों से जितना धन प्राप्त हो उसका भी बराबर बंटवारा कर लेना। पिता के मार्गदर्शन से दोनों की समस्या का समाधान हो गया।

यह स्पष्ट है कि सुख-दु:ख कहीं बाहर से नहीं आते और हमारे मन की अवस्था से उनका निर्धारण होता है, इसलिए हमें मनोभावों के सुधार और बदलाव पर विशेष ध्यान देना चाहिए। खास तौर से हमारे दु:ख और निराशा का कोई समाधान केवल बाहरी साधनों से होना संभव नहीं है। वैसे तो आज सुविधाओं का बहुत विस्तार हो रहा है। फिर भी व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में तनाव, टकराव और बिखराव बढ़ रहे हैं। इसका मुख्य कारण मानसिक शांति और संतुलन का अभाव है। एक सम्पन्न परिवार के मुखिया ने कहा- मेरे घर में सोफा-सेट है, टी.वी. है, गोल्डन और डायमंड-सेट है लेकिन घर में शांति नहीं है। इस पर किसी ने कहा-यह तो ठीक है कि तुम्हारे पास बहुत प्रकार के 'सेट' हैं, पर तुम्हारा मन भी 'सेट' है या नहीं, जरा इस पर तो विचार करो। उसने हंसते हुए कहा-वह तो 'अपसेट' है। उसे समझाया गया-मेरे भाई! मन को 'सेट' किए बिना दूसरे 'सेट' भी हमारे जीवन के लिए अभिशाप हो जाते हैं।

असल में मनुष्य अपने मन की भावनाओं और कल्पनाओं से ही सम्राट और भिखारी होता है। जिसका मन प्रसन्न और स्वस्थ है, वह अकिंचन होकर भी सम्राट है। जो अशांति के दवानल में जलता रहता है, वह सम्पन्न और समृद्ध होकर भी भिखारी के समान है। मानसिक स्वास्थ्य के अभाव में थोड़ी-सी प्रतिकूलता भी व्यक्ति को भीतर से तोड़ देती है। उस स्थिति में जीना भी मुश्किल लगने लगता है। ऐसे लोगों पर 'मन के जीते जीत है, मन के हारे हार'- यह कहावत बिल्कुल सटीक बैठती है। जब विचारों में श्रद्धा और उत्साह होते हैं, तब कठिन से कठिन काम करने में कोई मुश्किल प्रतीत नहीं होती। किन्तु जब मन में किसी तरह का उत्साह नहीं होता, तो छोटा-सा काम भी दुष्कर प्रतीत होने लगता है।

In Loving Memory of
Sh. Permanand Raheja Ji

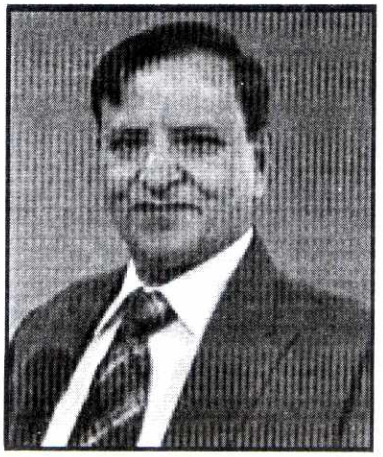

(15.07.1948-16.12.2012)

We miss you cherish your wisdom, liveliness and selflessness. Your memories and love showered on us will always remind us of your presence in our heart.

May God Confer everlasting peace to your soul.

Always loved and remembered by

- **Raheja Family**
- **Chawla Family**
- **Arya Family**
- **Mata Kamla Arya Smarak Trust & Kamal Jyoti Members**

www.thearyasamaj.org

स्वामी श्रद्धानन्द

स्वामी श्रद्धानन्द सच्चे अर्थों में दयानन्द के उत्तराधिकारी थे। ऋषि ने जो सिद्धान्त, विचार, आदर्श, उद्देश्य आदि दिए, उन्हें स्वामी श्रद्धानन्द ने व्यवहारिक रूप में क्रियान्वित किया। स्वामी जी की अपने गुरु ऋषि दयानन्द के प्रति श्रद्धा, निष्ठा तथा समर्पण प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है। स्वामी श्रद्धानन्द त्याग, सेवा, बलिदान की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने जो ऐतिहासिक राष्ट्रीय तथा समाज निर्माण व उत्थान के कार्य किए हैं, वैसे आज तक कोई नहीं कर सका है। स्वामी जी का संपूर्ण जीवन संघर्षो, कठिनाइयों और चुनौतियों में निकला। किन्तु उस वीर कर्मयोगी योद्धा ने चरैवेति-चरैवेति के मूल मन्त्र को कभी नहीं छोड़ा। जो उन्होंने कहा उसे कर दिखाया। उनकी करनी और कथनी में एकरूपता थी। उनका शिक्षा, समाजसुधार, राजनीति, राष्ट्रीय चेतना, शुद्धि, संस्कृति, वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार आदि सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनके जीवन के प्रेरक स्मरणीय तथा ऐतिहासिक कुछ कार्य इस प्रकार हैं-

स्वामी श्रद्धानन्द पहले गैर-मुस्लिम थे। जिन्होंने जामा मस्जिद के मिम्बर से हिन्दू-मुस्लिम एकता पर वेद की ऋचाओं से उपदेश दिया। स्वामी जी का भाषण भूतो न भविष्यति था। इस मस्जिद पर किसी अन्य हिन्दू को भाषण करने का सौभाग्य अभी तक नहीं मिला है।

- जलियांवाला हत्याकाण्ड में हजारों निर्दोष व्यक्तियों की नृशंस हत्या हुई। किसी भी नेता की वहाँ जाने की हिम्मत नहीं हुई। स्वामी जी ने कांग्रेस का सम्मेलन आयोजित किया। स्वागताध्यक्ष बने। हिन्दी में स्वागत भाषण दिया। यह कार्य उनका अभूतपूर्व था।
- स्वामी श्रद्धानन्द ने रौलेट एक्ट के विरोध में चांदनी चौक में विशाल जलूस का नेतृत्व किया। जब जलूस चांदनी चौक के टाउन हाल पर पहुंचा, तो गोरखा सैनिकों ने जलूस पर संगीनें तान दीं, तो स्वामी जी ने अपना सीना खोलकर निर्भीकता से कहा-' लो मैं खड़ा हूं, गोली मारो। सैनिकों की संगीनें झुक गई। इस घटना से स्वामी जी का कद बहुत ऊंचा हो गया। हिन्दू जाति में नवचेतना और एकता का भाव जागृत हुआ।
- स्वामी श्रद्धानन्द ने स्त्री शिक्षा के द्वार खोलकर क्रान्तिकारी कार्य किया। जालन्धर में कन्या पाठशाला की स्थापना करके नारी शिक्षा को आगे बढ़ाया। लड़कियों को पढ़ने के लिए प्रेरित किया।
- स्वामी जी ने अपना सर्वस्व लगाकर विश्व प्रसिद्ध गुरुकुल कांगड़ी की हरिद्वार में स्थापना की। उन्होंने गुरुकुल के लिए अपना घर छोड़ा, अपने दोनों पुत्रों को गुरुकुल में प्रवेश कराया। अपना सब कुछ गुरुकुल के लिए दाव पर लगा दिया। उन्होंने गुरुकुल शिक्षा-पद्धति का पुनरुद्धार किया। यह कार्य स्वामी जी का युगों तक स्मरणीय और वन्दनीय रहेगा। गुरुकुल कांगड़ी स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन्त स्मारक है। गुरुकुल की सभी भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने प्रशंसा की है।
- स्वामी श्रद्धानन्द शुद्धि-आन्दोलन के पुरोधा थे। उन्होंने शुद्धि सभा और दलितोद्धार के माध्यम से हिन्दुओं को संगठित किया। स्वामी जी शुद्धि कार्य को घर वापिसी मानते थे। 'जो लोग किन्हीं कारणों से विधर्मी हो गए हैं उन्हें अपना लो, उनके लिए द्वार खोल दो। तभी हिन्दू जाति संगठित रह सकती है। यह शुद्धि आन्दोलन ही स्वामी जी के बलिदान का कारण बना। स्वामी जी ने राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक आदि सभी क्षेत्रों में क्रान्तिकारी और ऐतिहासिक कार्य किए हैं। जो सदा प्रेरणा संदेश और आदर्श देते रहेंगे।

अमर बलिदान- 23 दिसम्बर 1926 को एक मदान्ध धर्मान्ध मजहबी युवक स्वामी जी से मिलने आया। स्वामी जी कई दिनों से बीमार चल रहे थे। उसने पानी पीने के लिए मांगा। सेवक पानी लेने के लिए गया। तब तक उस मजहबी पागल युवक ने स्वामी जी पर पिस्तौल से गोलियां चला दी। वे वीरगति को प्राप्त हो गये। स्वामी जी की शवयात्रा नया बाजार से होकर खारी बावली, चांदनी चौक, टाऊनहाल, सीसगंज होती हुई यमुना के तट पर पहुंची। इसी दिन की याद में प्रति वर्ष बड़ी धूमधाम से श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया जाता है। विशाल शोभा यात्रा निकलती है। बाद में शोभायात्रा श्रद्धांजलि के रूप में बदल जाती है। स्वामी जी का संपूर्ण जीवन वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार में व्यतीत हुआ। उनका बलिदान भी वैदिक धर्म के प्रचार में अन्तिम आहूति थां स्वामी जी सारा जीवन वीर की तरह जीए और वीर की तरह ही शानदार मृत्यु को प्राप्त हुए। उनका संपूर्ण जीवन प्रेरणाप्रद है।

धर्म, संस्कृति एवं स्वास्थ्य की मासिक पत्रिका

कमल ज्योति

डी-796, सरस्वती विहार,
दिल्ली-110034

अपने जीवन की शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक उन्नति के लिए 'कमल ज्योति' पत्रिका अवश्य पढ़े और इष्ट मित्रों को भी पढ़ाएं। सदस्य बनें और बनाएं।

www.thearyasamaj.org

महाराजा अग्रसेन आदर्श पब्लिक स्कूल डी.यू. ब्लॉक पीतमपुरा नई दिल्ली

पुरस्कार लेते हुए श्रीमती अलका चौधरी, प्रधानाचार्य हरकोर्ट बटलर सि. सै. स्कूल, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली

श्री अरूण आर्य, प्रधानाचार्य सी.एल. भल्ला डी.ए.वी. स्कूल को शिक्षक दिवस के अवसर पर सम्मानित करते हुए चेयरमैन श्री जयनारायण गुप्ता, श्री रामफल गुप्ता, श्रीमती रश्मि गहलोत व अन्य महानुभाव

गुरुदेव के श्री चरणों में, श्रद्धा सुमन संग वंदन
जिनके कृपा नीर से, जीवन हुआ चन्दन॥
धरती कहती अंबर कहते, कहते यही तराना॥
गुरु आप ही वो पावन नूर हैं, जिनसे रोशन हुआ जमाना॥

भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति व द्वितीय राष्ट्रपति, शिक्षाविद, दार्शनिक, महान वक्ता एवं शैक्षिक जगत में अविस्मरणीय योगदान देने वाले डॉ. सर्वपल्ली राधा कृष्णन के जन्मदिन को ही भारत में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। उनके जन्मदिन के उपलक्ष्य में संपूर्ण भारत में 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। इसी परम्परा का निर्वाह करते हुए श्री अग्रवाल धर्मशाला ट्रस्ट करोलबाग द्वारा संस्थापित महाराजा अग्रसेन आदर्श पब्लिक स्कूल डी.यू. ब्लॉक पीतमपुरा में 5 सितम्बर 2013 को शिक्षक दिवस अत्यन्त हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। सर्वप्रथम राधा कृष्णन जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दीप प्रज्ज्वलन किया गया। विद्यालय के प्रधान श्री रामफल गुप्ता जी की देखरेख में विद्यालय के विशाल प्रागंण में श्रीमती रश्मि गहलोत जी (शिक्षा उपनिदेशक दिल्ली) श्री एस.के. यादव (शिक्षा उपनिदेशक दिल्ली) डॉ भपेन्द्र सिंह अन्य शिक्षा अधिकारी व विद्यालय के प्रबन्धक इस सम्मानित दिवस को मनाने हेतु एकत्रित हुएं विद्यालय में अध्यापिकाओं के मनोरंजन हेतु संगीत, कला, व खेलों की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया व प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली अध्यापिकाओं को पुरस्कार से सम्मानित किया गया। विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने सम्मानपूर्वक अभिनन्दन व तालियों के साथ अध्यापिकाओं का उत्साहवर्धन किया। इस शुभ अवसर पर इन्टर नेशनल एमिनेन्ट एजुकेशनिस्टस फोरम ऑफ इंडिया पश्चिम विहार न्यू दिल्ली ने मुख्य अतिथि डा. प्रदयुम्न कुमार (प्रधानाचार्य हिन्दू कॉलेज, यूनिवर्सिटी ऑफ दिल्ली) के कर कमलों द्वारा आयोजन में उपस्थित विद्यालयों के प्रधानाचार्य व शिक्षाविदों को सम्मानसूचक शाल व पुरस्कार वितरित किए। अध्यापिकाओं के लिए जलपान आदि की भी व्यवस्था की गई। विद्यालय के चेयरमेन श्री जयनारायण जी तथा प्रधानाचार्या श्रीमती हर्ष आर्या जी ने सभा में उपस्थित सभी शिक्षाविदों को व अध्यापिकाओं को शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दी व सभी अध्यापिकाओं को संदेश दिया कि शिक्षक छात्र को केवल ज्ञान ही नहीं देता बल्कि सामाजिक परिस्थितियों से भी छात्र का परिचय कराता है क्योंकि शिक्षा ही मानव समाज का सबसे बड़ा आधार है। अन्त में अध्यापिकाओं ने सभी को हार्दिक धन्यवाद दिया।

श्रीमती कमला अग्रवाल जी के 78वें जन्मोत्सव पर हार्दिक शुभकामनाएं

सहृदया, कर्त्तव्यनिष्ठ, धर्मनिष्ठा, सर्वप्रिय, परोपकारी, गऊ सेविका श्रीमती कमला अग्रवाल जी अपने जीवन के 77 वर्ष 28 दिसम्बर 2013 को पूरे कर रही हैं।

आपकी 78 वें जन्मोत्सव के शुभावसर पर मैं अपनी ओर से, 'माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट (रजि.) दिल्ली तथा 'कमल ज्योति' परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। परमपिता परमात्मा आपको उत्तम स्वास्थ्य के साथ दीर्घायु प्रदान करें।

जन्मदिवस पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

-अतुल आर्य

www.thearyasamaj.org

घर-घर में बढ़ता नर-नारी संघर्ष

एक पुष्ट नर व सम्पुष्ट नारी प्रकृति की अभिनव सृष्टि है। यह चमत्कारपूर्ण प्राणी युगल, परस्पर प्रेम, आनन्द, रति एवं पृथ्वी पर नव-जन्म के साधन के रूप में निर्मित हुए थे। नर-नारी के अन्तरंग प्रेम से वृहत्, गहन, महत् व सघन और कोई प्रेम सम्बन्ध नहीं है। अन्य सभी सम्बन्ध सीमित, अपूर्ण, संकुचित, अतः अतृप्त सम्बन्ध हैं। प्रेमी पति व प्रेमिका पत्नी से गहनतम व निखिल अद्वैत रूपी सम्बन्ध अन्य कोई नहीं है। पर यह ईश्वर की और प्रकृति की अपूर्व व अनुपम कृति और उनके सम्बन्ध आज विकृत, विषाक्त और व्यथाकारक हो गए हैं। क्षुद्र आत्म महत्व, आत्म तिरस्कार, पर-वर्जना, तीव्र स्वार्थ भाव, आत्मिक संकुचन और मन-प्राण से अधिक ध्यान देह और देह सुखों पर होने से ये मधुरातिमधुर सम्बन्ध कटु से भी कटुतर होते जा रहे हैं।

जीवन में समस्त संघर्ष और व्यथा-वेदना को त्यागपूर्ण प्रेम के आश्रय से सरलता से सहा और झेला जा सकता है। परस्पर की प्रीति, परस्पर का त्याग, देखभाल, सुख प्रदायक भावना पुनः जीवन के मधुर उपवन को हरा-भरा कर सकती है। प्रेम का अर्थ ही है "इदं न मम्", यह सब मेरे लिए नहीं बल्कि तेरे लिए। पति पत्नी को परम प्रकृति का अवतरण रूप, प्रतिनिधि मानकर उसका पूरा ध्यान और सम्मान करे तथा पत्नी पति को परमपुरुष का प्रतिनिधि समझकर अपना समस्त ध्यान संकेन्द्रण पति की ओर ही रखे, तो एक ऐसा सम्मिलन बिन्दु निर्मित होगा, जहां दोनों को ही किसी अन्य स्वर्ग-बैकुण्ठ की तलाश नहीं करनी पड़ेगी। सतत वे स्वयं को एक दिव्य बैकुण्ठ में ही निवसित रहने का प्रत्यक्ष अनुभव करेंगे। हे पुरुष यह नारी तेरे लिए परम सुख, चरम उल्लास, सांसारिक कार्य, धर्म साधना एवं आदर और विकास का साधन है। इसका पूरा सम्मान कर। हे नारी यह पुरुष तेरा सबसे समर्थ संरक्षण, कामना साधन, सर्व सुख-समृद्धि का अर्जक व प्रदाता है, उस पर अपने प्रेम के निर्झर बहा दे। स्वयं को उसके अहं में विलीन कर दे और दोनों मिलकर स्वयं में एक नए दिव्य मानव युगल को स्वरूपादित करो।

- साभार 'अनिवार्य'

त्यागमयी-ममतामयी माता कमला आर्या

श्रीमती कमला आर्या के 74वें जन्मदिवस (3 दिसम्बर 2013) पर श्रद्धासुमन
समाज सेवा व रचनात्मक कार्यों में सदैव प्रोत्साहन देने वाली
माता कमला आर्या जी को शत्-शत् नमन

कमला आर्या का रहा, सदा श्रेष्ठ व्यवहार।
कूट-कूट कर गुण भरे, परिचय शीलाचार।।
जीवन उनका कमलवत्, यशः गन्ध से पूत।
पंक कभी व्यापा नहीं, घर में भी अवधूत।।
सेवा-धर्म निरत रही, नहीं किया विश्राम।
आजीवन विजयी रहीं, जीवन था संग्राम।।
त्यागमयी, ममतामयी, माता कमला आर्या।
परोपकार में निरत थीं, बच्चों की आचार्य।
बच्चों के निर्माण में लगी रहीं दिन-रात।
पति-पथ पर चलती रहीं, जीवन था अवदात।।
उत्तम सन्तति चार हैं, उज्ज्वल करते नाम।
सुसंस्कार उनको दिये, अवगुण का क्या काम।।
'अतिथि देवो भव' रहा, जीवन का आदर्श।
मानवता में रत रहीं, किया वेद अवमर्ष।।
यज्ञ-संस्कृति में पलीं, वैदिक चिन्तन लीन।
आदर्शों में निरत वह, हुई प्रभु में लीन।।
गुणागार वह हैं अमर, यशः अन्ध अवदात।
कमल-ज्योति सा पत्र है, नहीं रहा अब गात।।

- डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया
बी-3/79, जनकपुरी, दिल्ली-58

माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट के सभी सदस्य एवं 'कमल ज्योति' परिवार

www.thearyasamaj.org

RNI No.DEL BIL/2008/25452 Total Pages 12 Posting Date 5 or 6 December 2013 DL (N)0225/2012-14

ओ३म्

प्रेषक Date of Publication: 25 November 2013

कमल ज्योति

दिसम्बर 2013 (मासिक) एक प्रति का मूल्य 10 रुपये

डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034,

फोन : 27017780

मेवा में

बुरा पाप होता है पापी नहीं

विवेकानन्द जयपुर के पास एक छोटी रियासत में मेहमान थे। जिस दिन विदा हो रहे थे उस दिन वहाँ के जागीरदार ने उनके विदाई समारोह में नाच-गाने का कार्यक्रम रखवा दिया। एक वेश्या भी बुलाई गई। विवेकानन्द को मालूम पड़ा तो वे बड़े हैरान और गुस्से में भरकर तम्बू में बैठे रहे। किन्तु समारोह में बुलाने पर भी नहीं गये। वेश्या को ज्ञात हुआ कि स्वामीजी नहीं पधारे तो वह बड़ी दुःखी हुई और उसने भजन गाया। "एक लोहा पूजा में राखत-एक घर बहिर परयो, पारस गुन अवगुन नाहिं चितवन कंचन करत खरो। प्रभु जी मेरे अवगुन चित न धरो।" अब तो विवेकानन्द और सचेत हुए। सोचने लगे। उन्होंने अपने संस्मरण में लिखा कि उस दिन मुझे लगा कि आज वास्तविक संन्यास का जन्म हुआ है। क्योंकि वेश्या को देखकर मेरे मन में कोई आकर्षण, विकर्षण नहीं था। मेरा करूणाभाव ही जाग्रत हुआ उसे देखकर। बुरा पाप होता है, पापी नहीं।

P.K. JAIN ENGINEERS & COLLABORATORS

PKS DEVELOPERS (P) LTD

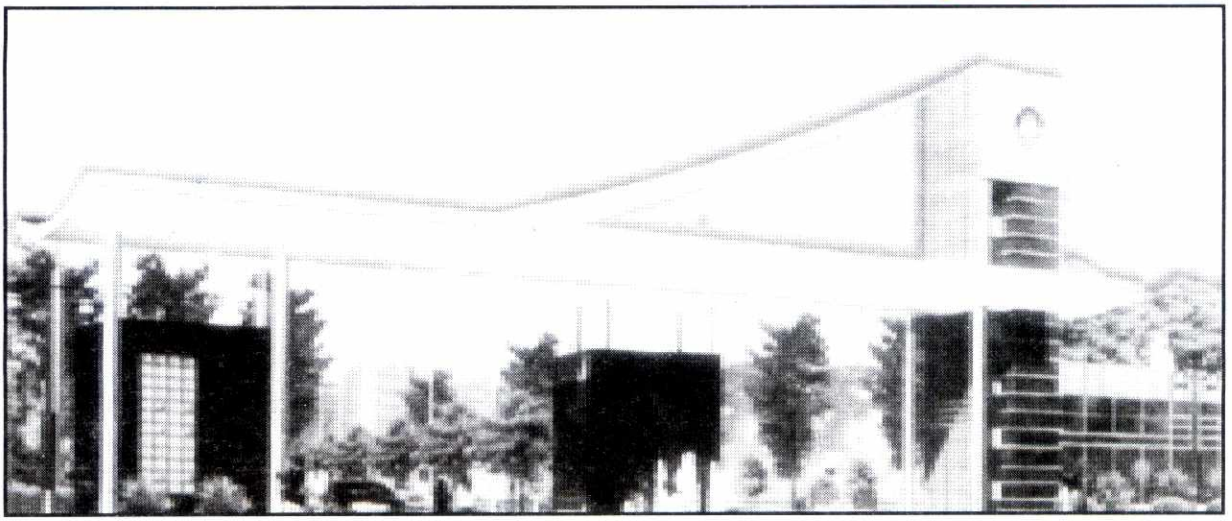

P.K. JAIN B.E. (Civil)

C-407, Saraswati Vihar, Pitampura, New Delhi-110034

Ph. : 011- 27025050, Mobile : 9811142440

Sidharth Jain, Ph.: 011- 27025050, Mob.: 9810562000

E-mail : info@pksdevelopers.com Website : www.pksdevelopers.com

Building A Name Brick by Brick

स्वामी-माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट (रजि.) के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक एल.आर. आहूजा, चलभाष : 9810454677 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करौलबाग, नई दिल्ली-5, दूरभाष : 41548504 मो. 9810580474 से मुद्रित। कार्यालय : डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034 से प्रकाशित